नाथ द्वारा पर चढ़ाई

22 जून 1988 को पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने जयपुर में प्रेस कांफ्रेस कर एक विस्फोटक बयान दिया कि हरिजनों को नाथद्वारा मन्दिर (उदयपुर से 50 कि.मी.) में जाने की कोई जरूरत नहीं है। हरिजनों और ब्राह्मणों की बराबरी नहीं हो सकती। आर्य समाज के सती प्रथा विरोधी बयान शास्त्र सम्मत नहीं हैं। शंकराचार्य के इन बयानों पर मचे बवाल के कारण अनेक हरिजन महिला संगठन व ट्रेड यूनियन तथा कांग्रेस, जनता पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और आर्य समाज उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गये। शंकराचार्य के भांजे बृजमोहन दवे और उनके कई रिश्तेदार, जिन्होंने स्वामी अग्निवेश के दिवराला मार्च का समर्थन किया था, इस मुद्दे पर भी उनके खिलाफ हो गये। श्री दवे ने कहा कि अपने बयान से शंकराचार्य ने जमाने को पीछे धकेल दिया है। दरअसल यह मामला 1989 में तब प्रकाश में आया था जब कांग्रेस समर्थित हरिजन सेवा समाज के कार्यकर्ताओं ने नाथद्वारा मन्दिर में प्रवेश करने हेतु एक पदयात्रा की योजना बनाई थी लेकिन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी की दगाबाजी के कारण यह योजना बीच में ही रद्द करनी पड़ी थी क्योंकि इसे लेकर राजस्थान और गुजरात के कांग्रेसी नेताओं की पिटाई सवर्ण अर्थात् कट्टरपंथी हिन्दुओं ने कर दी थी। इसी वर्ष सितम्बर में बहुजन समाज पार्टी ने भी उक्त मन्दिर में घुसने का विफल प्रयास किया था तथा तनाव बढ़ने पर मन्दिर में जाने का कार्यक्रम उसे टालना पड़ा था। काशीराम को भी नाथद्वारा मन्दिर के बाहर अपने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करने का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा था। इस दौरान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटू सिंह एडवोकेट ने अलवर में कहा कि कई हिस्सों के आर्य समाजी नाथद्वारा की ओर प्रस्थान करेंगे। वे कांगेस (ई) के प्रमुख नेता और विधायक भी रह चुके थे अतः सरकार की दिक्कत बढ़ गई थी। स्वामी अग्निवेश जी ने भी जून 1988 में यह बयान देकर कि वे 10 जुलाई से नाथद्वारा मन्दिर की ओर पदयात्रा शुरू करेंगे, स्थिति एकाएक गम्भीर व विस्फोटक हो गई। कारण, पिछले साल ही दिवराला की सती प्रथा विरोधी यात्रा निकाल कर उन्होंने राजस्थान सरकार की अच्छी फजीहत करा दी थी।

स्वामी अग्निवेश जी ने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उदयपुर में जाति तोड़ो यज्ञ पूरा होते ही 10 जुलाई 1988 से अपनी यात्रा शुरू कर दी। उनके साथ तीन सौ से अधिक आर्यसमाजी और बड़ी संख्या में हरिजन शामिल थे। इसके अलावा हरिजन प्रवेश अभियान संघर्ष समिति के संयोजक सत्यव्रत सामवेदी जी और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटू सिंह एडवोकेट सहित अन्य कई आर्य समाजी नेता भी थे। पदयात्रा शुरू करने से पूर्व स्वामी अग्निवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा था- "हमारा उद्देश्य संविधान के मुताबिक हरिजनों व दलितों को ऊँचा उठाना और जातिवाद, छुआछूत को जड़ से खत्म करना है। हम किसी धर्म या सम्प्रदाय के खिलाफ नहीं हैं। हम सभी पंथों का सम्मान करते हुए राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखना चाहते हैं। हम डा. भीमराव अम्बेडकर, महात्मा गाँधी, महर्षि दयानन्द, भगवान् बुद्ध और स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लेकर ही जातिवाद के खिलाफ अपना यह कदम उठा रहे हैं। भारतीय संविधान की गरिमा भी हमारे इस अभियान से बढ़ेगी जो सभी को समान दृष्टि से देखता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी सभी इंसान परमात्मा की संतान हैं, सभी एक ही मार्ग से इस संसार में आती हैं और सभी एक ही मार्ग से चली भी जाती हैं अतः जब योनि और चिता कोई भेद नहीं करती तो ये मन्दिर ऐसा भेद क्यों पैदा कर रहे हैं? हरिजनों के प्रवेश से जब आर्य समाज का मन्दिर अपवित्र नहीं होता तो नाथद्वारा का श्रीनाथ जी का मन्दिर कैसे अपवित्र हो सकता है?"

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री जगदीश प्रसाद 'वैदिक', बचपन बचाओ आन्दोलन के प्रणेता कैलाश सत्यार्थी, जाति तोड़ो यज्ञ के ब्रह्मा और प्रसिद्ध हरिजन नेता जो आर्य समाज के भी नेता थे श्री चिंतामणि जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। चूँकि पिछली रात स्वामी अग्निवेश जी की

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री जगदीश प्रसाद 'वैदिक', बचपन बचाओ आन्दोलन के प्रणेता कैलाश सत्यार्थी, जाति तोड़ो यज्ञ के ब्रह्मा और प्रसिद्ध हरिजन नेता जो आर्य समाज के भी नेता थे श्री चिंतामणि जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। चूँकि पिछली रात स्वामी अग्निवेश जी की एक आम सभा के दौरान कुछ शरारती तत्वों ने पुलिस पर पत्थर व सोडे की बोतलें फेंकी थी, स्वामी अग्निवेश के खिलाफ नारेबाजी की थी अतः यात्रा के साथ पुलिस भी चल रही थी।

स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा के विरोध में 10 जुलाई को नाथद्वारा में बंद का आह्वान किया गया, सभी दुकानें बन्द थीं। नाथद्वारा मंदिर के कर्मचारियों ने भी इसमें सहयोग दिया था। बन्द के कारण श्रीनाथजी के दर्शन के लिए आए यात्रियों को काफी असुविधा रही। इसी बीच नाथद्वारा नव जागरण संघ के कार्यकर्त्ताओं ने एक बैठक कर निर्णय लिया कि 10 जुलाई को सुबह 11 बजे राजभोग दर्शन के बाद घोड़ाघाटी तक पदयात्रा करेंगे और स्वामी अग्निवेश से वहां भेंट कर उनसे विचार-विमर्श कर यह प्रयास करेंगे कि वे अपनी पद यात्रा स्थगित कर दें। जब नाथ द्वारा मन्दिर के प्रतिनिधियों तथा स्वामी अग्निवेश के मध्य वार्ता विफल हो गई तो यात्रा को पुनः प्रारम्भ करते ही नाथद्वारा की सीमा पर पुलिस ने सभी यात्रियों को भारी टकराव के बाद गिरफ्तार कर चित्तोड़गढ़ जाकर छोड़ दिया। वहाँ से यात्रियों को अपने-अपने गन्तव्य के लिए प्रस्थान किया गया। यात्रा में स्वामी वरूणवेश, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी आत्मानन्द आदि संन्यासी व प्रो. श्योताज सिंह, धर्मवीर, रामसिंह आर्य आदि भी सम्मिलित रहे। इसका संयोजन श्री जगवीर सिंह ने ही सम्भाला।

स्वामी अग्निवेश जी की इस पद-यात्रा ने भी ठीक वैसा ही वातावरण तैयार कर दिया जैसा पिछले वर्ष दिल्ली-दिवराला सती प्रथा विरोधी यात्रा के दौरान तैयार हुआ था।